अध्याय 14
भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्व
(Importance of Livestock in Indian Economy)

देश की 69–70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है एवं कृषि से सम्बन्धित धन्धों पर आश्रित है। पशुधन कृषि व्यवसाय में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। पशुधन से प्राप्त आय, घरेलू, पोषण, सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। भारत का पशुधन क्षेत्र विश्व में सबसे बड़ा है। 19वीं पशुधन गणना, 2012 के अनुसार भारत में कुल 5120.57 लाख पशुधन एवं 7292.09 लाख कुक्कुट सम्पदा है। 92.5 मिलियन भैंस (मादा) 16.2 मिलियन भैंस (नर), 122.9 मिलियन गायें (मादा) 68.0 मिलियन गायें (नर) तथा 729.2 मिलियन मुर्गियां है (तालिका 14.1)। वर्ष 2014–15 के दौरान पशुधन क्षेत्र (Livestock Sector) से 145.73 मिलियन टन दूध (66.42 मिलियन टन दूध गायों से 74.71 मिलियन टन दूध भैंसों से एवं 5.18 मिलियन टन दूध बकरियों से), 48.5 मिलियन टन ऊन, 6.73 मिलियन टन मांस तथा 78484 मिलियन अण्डों का उत्पादन हुआ। दूध उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है।

वर्ष 2012–13 में कुल राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 4.11 प्रतिशत और कृषि से प्राप्त सकल घरेलू उत्पाद का 25.6 प्रतिशत पशुधन क्षेत्र से प्राप्त हुआ।

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्व (Importance of Livestock in Economy of Rajasthan)

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है। राजस्थान का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. है। इसका पश्चिमी तथा उत्तर पश्चिमी भाग मरू या अर्द्धमरूस्थलीय है। जो वृहद् भारतीय थार का रेगिस्तान के नाम से जाना जाता है। यह थार का रेगिस्तान राजस्थान के 12 जिलों में फैला है और कुल भू–भाग का 61.11 प्रतिशत है। राज्य के कुछ भाग पर अरावली की पहाड़िया बिखरी हुई है। राज्य में सिंचाई जल की अनुपलब्धता, सिंचाई के साधनों का अभाव, समय पर वर्षा का न होना, जोतों का आकार छोटा आदि ऐसे कारण है जिसकी वजह से ग्रामीण क्षेत्रों की जनता को कृषि उत्पादन के साथ–साथ पशुपालन को एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में अपनाया जाता है। 19वीं पशुगणना, 2012 के अनुसार राज्य में कुल 577.32 लाख पशुधन तथा 80.24 लाख कुक्कुट सम्पदा है। जिसे नीचे तालिका 14.1 में दर्शाया गया है।

तालिका 14.1 पशुधन सम्पदा (2012)

क्रसं	पशु की जाति	भारत (मिलियन में)	राजस्थान (लाखों में)
1	गौवंश	190.90	133.24
2	भैंस	108.70	129.76
3	भेड़	65.06	90.71
4	बकरी	135.17	216.66
5	ऊँट	0.4	3.26
6	सुअर	10.29	2.38
7	अन्य	1.51	1.23
8	मुर्गी	729.2	80.24

राजस्थान राज्य में कुछ जिले ऐसे है, जिसकी पशुधन घनत्व के रूप में विशेष पहचान है। जिन्हें तालिका 14.2 में दिया गया है।

तालिका 14.2 राजस्थान में पशुधन घनत्व (पशुगणना, 2012 के अनुसार)

क्र.स.	जिले का नाम	क्षेत्र (वर्ग कि.मी.)	पशु घनत्व (प्रतिवर्ग किमी)
1	अजमेर	8481	232
2	अलवर	8380	206
3	बांसवाड़ा	5037	277
4	बारां	6992	115
5	बाड़मेर	28387	189
6	भरतपुर	5066	251
7	भीलवाड़ा	10455	234
8	बीकानेर	27244	102

* 10 लाख (10,00,000) = एक मिलियन

9	बूंदी	5776	167
10	चित्तौड़गढ़	10856	127
11	चूरू	16830	110
12	दौसा	3432	292
13	धौलपुर	3033	174
14	डूंगरपुर	3770	289
15	गंगानगर	10978	144
16	हनुमानगढ़	9656	138
17	जयपुर	11143	252
18	जैसलमेर	38401	83
19	जालौर	10640	153
20	झालावाड़	6219	165
21	झुन्झुनूं	5928	217
22	जोधपुर	22850	157
23	करौली	5524	169
24	कोटा	5217	124
25	नागौर	17718	178
26	पाली	12387	186
27	प्रतापगढ़	—	—
28	राजसमन्द	386	292
29	सवाईमाधोपुर	4498	179
30	सीकर	7732	274
31	सिरोही	5136	175
32	टोंक	7194	168
33	उदयपुर	13419	207
		कुल –342239	

* राज्य में सर्वाधिक पशुधन वाला जिला बाड़मेर, जबकि कम पशुधन वाला जिला धौलपुर है।

* पशु घनत्व की दृष्टि से सर्वाधिक पशुघनत्व वाले जिले दौसा एवं राजसंमद तथा सबसे कम पशुधन घनत्व वाला जिला जैसलमेर है।

पशुधन से जो पशु उत्पादन प्राप्त होते है, उनका राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है, जिनका वर्णन नीचे दिया गया है।

1. दूध उत्पादन – राज्य में वर्ष 2014–15 में कुल 16934 हजार टन दूध का उत्पादन हुआ, उसमें से 6126 हजार टन गायों से, 8985 हजार टन भैंसों से तथा 1823 हजार टन बकरियों से प्राप्त हुआ। दूध उत्पादन में राज्य का भारत में द्वितीय स्थान है।

2. मांस उत्पादन – राज्य में वर्ष 2014–15 में कुल 181 हजार टन मांस का उत्पादन हुआ। बकरे के मांस को (Chevon), भेड़ के मांस को (Mutton), सुअर के मांस को (Pork) तथा गाय के मांस को (Beef) कहते है मांस उत्पादन में राज्य का भारत में बारहवां स्थान है।

3. अण्डा उत्पादन – राज्य में सर्वाधिक अण्डा उत्पादन अजमेर जिले में होता है। इसलिये यहां 1988 में राजकीय कुक्कुट प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई। कुक्कुट पालन में राजस्थान का देश में चौदहवां स्थान है। जहां देशी मुर्गी प्रतिवर्ष 120 अण्डे देती है। वहीं उन्नत नस्ल की मुर्गी प्रतिवर्ष 252 अण्डे देती है वर्ष 2014–15 में राज्य में कुल अण्डा उत्पादन 1320 मिलियन था। अण्डा उत्पादन में राज्य का भारत में चौदहवां स्थान है।

4. ऊन उत्पादन – पशुधन निदेशालय, राजस्थान सरकार, जयपुर के अनुसार वर्ष 2014–15 में 90.7 लाख भेंड़े है। जिनसे कुल 14463 मीट्रिक टन ऊन का उत्पादन प्राप्त हुआ। ऊन उत्पादन में राज्य का भारत में प्रथम स्थान है।

5. बाल – ऊँट तथा बकरी की कुछ नस्लों से बाल प्राप्त होते हैं, जिनका उपयोग थैले, दरियाँ, ब्रश निम्न श्रेणी के कम्बल आदि बनाये जाते हैं।

6. चमड़ा – चमड़ा मृत एवं मांस के लिये पाले जाने वाले पशुओं से प्राप्त होता है। जो आय का एक अतिरिक्त स्रोत है। भारत ने 2013–14 में चमड़े तथा उनके उत्पादों के निर्यात करने से 36000 करोड़ रूपये की आय प्राप्त की।

7. सींग, खुर, हड्डी – सींग और खुरों से कई प्रकार के सजावटी सामान तथा बटन, कंघी आदि भी बनाये जाते है। जबकि हड्डी के चूरे को निर्जमीकृत करके मुर्गी आहार में काम में लिया जाता है। तथा खेती में खाद के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

8. अन्य – पशुओं का उपयोग परिवहन में बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, ऊँटगाड़ी, सवारी ऊँट आदि में होता है। साथ ही पर्यटक स्थल एवं मेलों में ऊँट एवं घोड़ों की दौड़ एवं उनके नाचने से मनोरंजन होता है। पशुओं से गोबर की प्राप्ति होती है जिसे खाद एवं छाने (उपले) बनाने में प्रयोग होता है। अतः पशुधन का राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है।

पशुधन का कृषि में महत्व
(Importance of livestock in agriculture)

भारत एक कृषि प्रधान देश है। जहाँ की 69–70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं उससे सम्बन्धित कार्यों पर निर्भर करती है। प्राचीनकाल से ही पशुओं का कृषि में

महत्व रहा है। पशुपालन कृषि का अभिन्न अंग है तथा यह एक–दूसरे के पूरक है। आज देश में जनसंख्या के साथ–साथ पशु संख्या भी बढ़ती जा रही है। अधिकतर किसानों के पास खेती के लिए जमीन के छोटे टुकड़े हैं जहाँ ट्रेक्टर द्वारा खेती करना लाभदायक नहीं है। अतः छोटे किसान कृषि कार्यों में पशुओं का ही उपयोग करते हैं। अतः निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि पशुधन का कृषि में बहुत महत्व है।

1. कृषि क्रियाओं में महत्व

भारत में यांत्रिक कृषि केवल बड़े–बड़े फार्मो पर की जाती है परन्तु अधिकतर किसानों के पास खेत की छोटी–छोटी जोते हैं, जहां ट्रेक्टर द्वारा खेती करना संभव नहीं है। अतः किसान निम्नलिखित कृषि क्रियाओं को पशुओं की सहायता से ही करते हैं।

1.1 जुताई करना

अधिकांशतः किसानों की छोटी–छोटी जोतें होने के कारण आज भी जुताई पशुओं (बैल,पाडे,ऊँट) द्वारा ही की जाती है। बैलों से चलित देशी हल के फार की गहराई ट्रेक्टर चलित फार से अधिक होती है।

1.2 भूमि को समतल करना

भूमि के असमतल होने पर करहे द्वारा समतल करते है। इस करहे को खीचने के लिए बैल की आवश्यकता होती है। बैल के स्थान पर पाडे या ऊँट का भी उपयोग कर सकते हैं।

1.3 पाटा चलाना

जुताई के पश्चात् भूमि को समतल बनाने के लिए तथा मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए लकड़ी का भारी पाटा चलाया जाता है। इसे खींचने के लिए बैलों की आवश्यकता होती है।

1.4 बुआई करना

बुआई के लिए देशी हल के पीछे नायला बाँधकर बीज की बुआई की जाती है। यह कार्य भी बैलों व ऊँटों द्वारा किया जाता है।

1.5 मेंड़ व क्यारियाँ तैयार करना

इस कार्य में रिजमेकर आदि यंत्र काम में लेते है जिन्हें बैल आदि पशुओं से खींचा जाता है।

1.6 सिंचाई

कृषि के लिए जल सींचन का बड़ा महत्व है। भारत में जल सींचन अधिकतर कुँओं से किया जाता है। जिनसे पानी निकालने के लिए बैलों आदि का ही प्रयोग किया जाता है।

1.7 निराई–गुड़ाई

खेतों से खरपतवार निकालने के लिए कलपा यंत्र काम में ही लिया जाता है जिसे बैल आदि पशुओं द्वारा खींचा जाता है।

1.8 गहाई

छोटे किसान अधिकतर गहाई का कार्य भी बैलों द्वारा ही करते हैं।

2. यातायात के साधन

किसान अपना उत्पादन खलिहान से घर तक तथा घर से कृषि उपज मण्डी तक बैल गाड़ियों द्वारा ले जाते है। ऊँट, घोड़ा, खच्चर आदि भी कृषि उपज इधर उधर ले जाने के काम आते हैं। दुर्गम स्थानों, पहाड़ों, रेगिस्तानों में अन्य सुविधाओं के अभाव में पशु यातायात ही प्रमुख साधन है।

3. खलिहान की सुरक्षा

खलिहान की सुरक्षा मुख्यतः पालतू कुत्ते द्वारा की जाती है।

4. कार्बनिक खाद

खाद उपज हेतु एक पौष्टिक पदार्थ है। भूमि की उर्वरता बढ़ाती है। गोबर एवं मूत्र पशुओं से ही प्राप्त होते हैं, जो खाद का कार्य करते हैं।

5. अकार्बनिक खाद

पशुओं के मरने के बाद उनकी हड्डियों से सुपर फॉस्फेट खाद बनाई जाती है। यह खाद फलों वाले पौधों व अलंकृत बागवानी के पौधों के लिए आवश्यक होती है।

6. ऊर्जा उत्पादन में योगदान

पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। गोबर के उपले बनाकर उनसे भोजन बनाने के काम लिया जाता है। गोबर का प्रयोग गोबर गैस संयंत्र में करके उससे गोबर गैस प्राप्त की जाती है। इस गैस का उपयोग भोजन बनाने, गैस की बत्ती से रोशनी उत्पन्न करने, विद्युत उत्पन्न करने आदि अनेकों कार्यों में किया जाता है। गोबर गैस बनाने के बाद प्राप्त स्लरी खाद के रूप में खेतों में प्रयोग की जाती है।

7. कृषकों को पूर्ण रोजगार

छोटे एवं सीमान्त किसानों को पशुपालन से वर्ष भर रोजगार प्राप्त होता है। खेती करने के बाद शेष समय में किसान पशु

पालन व्यवसाय कर पूर्ण रोजगार को प्राप्त करता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार भी होता है। एक उन्नत नस्ल की गाय एक परिवार को रोजगार प्रदान करने में सक्षम है।

8. कृषकों को पौष्टिक आहार का स्रोत

पशुपालन से दूध, मांस, अण्डा आदि प्राप्त होते हैं, जो पौष्टिक आहार के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दूध लगभग व पूर्ण भोजन है। मानव जाति के लिए दूध, दही, घी, मांस अण्डा आदि पदार्थ भोजन के रूप में उपयोगी हैं। इस देश में जहाँ काफी लोग शाकाहारी हैं, पशु प्रोटीन, दूध के रूप में ली जाती है। प्रोटीन के अतिरिक्त वसा, शर्करा,विटामिन, लवण आदि आवश्यक तत्व भी दूध में विद्यमान होते हैं।

9. आर्थिक स्थिति में सुधार

हमारे देश में राष्ट्र की कुल कृषि आय का लगभग 20 प्रतिशत केवल पशुधन से ही प्राप्त होता है। पशुओं से जो आय प्राप्त होती है। इस आय का उपयोग कृषि के लिए खाद, बीज एवं यंत्र खरीदने में किया जा सकता है।

10. कृषि में उपजे फसल अवशेष एवं खाद्य उपजात का सर्वोत्तम उपयोग

फसलों से प्राप्त उपजात जैसे कड़वी, भूसा आदि पशुओं को खिलाकर उनसे दूध, ऊन, मांस आदि प्राप्त किये जाते हैं। बैलों के द्वारा कृषि कार्य सम्पादित किया जाता है। यदि पशु न हो तो यह फसल उपजात व्यर्थ नष्ट हो जायेंगे क्योंकि ये मानव के उपयोग के बाहर पदार्थ हैं। मानव केवल इनको ईंधन के रूप में उपयोग ले सकता है। इस प्रकार पशुओं का कृषि में महत्वपूर्ण योगदान है। बिना पशुओं के भारत में खेती करना कठिन कार्य है। पशुओं की उपयोगिता खेती में भविष्य में भी बनी रहेगी।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. भारत में विश्व की 57 प्रतिशत भैंसे तथा 12.5 प्रतिशत गायें हैं।
2. दुग्ध उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है।
3. राजस्थान के अजमेर जिले में सर्वाधिक मुर्गियों की संख्या है।
4. राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रफल का 61.11 प्रतिशत रेगिस्तान है।
5. वर्ष 2012 की पशुगणना के अनुसार राजस्थान में 577.32 लाख पशुधन तथा 80.24 लाख मुर्गियाँ हैं।
6. वर्ष 2012 की पशु गणना के अनुसार सर्वाधिक पशु घनत्व वाले जिले दौसा एवं राजसमंद तथा सबसे कम घनत्व वाला जिला जैसलमेर है।
7. प्रत्येक भेड़ से प्रतिवर्ष औसतन 1.365 किलोग्राम ऊन प्राप्त होती है।
8. भारत कृषि प्रधान देश है।
9. खेतों का आकार छोटा होने के कारण कृषि कार्यों में मशीनों की अपेक्षा पशुधन अधिक उपयोगी है।
10. यातायात के लिए ऊँट, घोड़ा, खच्चर आदि को काम में लेते हैं।
11. फसलों की कटाई के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन से रोजगार मिलता रहता है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. विश्व में दुग्ध उत्पादन में भारत का कौनसा स्थान है?
   (अ) पहला (ब) दूसरा
   (स) तीसरा (द) चौथा
2. वर्ष 2012 की पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन कितना है?
   (अ) 577.32 लाख (ब) 621.42 लाख
   (स) 534.49 लाख (द) उपरोक्त में से कोई नहीं
3. भारत की जनसंख्या कृषि पर निर्भर है–
   (अ) 40 प्रतिशत (ब) 69–70 प्रतिशत
   (स) 50 प्रतिशत (द) 55 प्रतिशत।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

4. कुल राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में पशुधन का हिस्सा कितना है?
5. पशुगणना 2012 के अनुसार प्रतिवर्ग किलोमीटर सबसे कम पशु राजस्थान के किस जिले में पाये जाते हैं?
6. यातायात में उपयोगी पशुओं के नाम लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

7. वर्ष 2012 की पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक पशु संख्या एवं सबसे कम पशु संख्या वाले जिलों के नाम लिखिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

8. राजस्थान की अर्थव्यवस्था मे पशु उत्पादों के महत्व की विस्तृत जानकारी दीजिए।
9. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पशुधन का क्या महत्व है? बताइए।

उत्तरमाला

1. (अ) 2. (ब) 3. (ब)